Vol 3 Issue 6 March 2014

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research
Vol. 3 | Issue. 6 | March. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net
ORIGINAL ARTICLE

संत तुलसीदास के सामाजिक विचार

भगवान आदटराव

संतोष भीमराव पाटील महाविद्यालय , मंद्रुप, तह. द. सोलापुर, जि. सोलापुर.

***सारांश*:**

महात्मा बुध्द के पश्चात् गोस्वामी तुलसीदास जी ने ही भारतीय लोकमानस को सर्वाधिक स्पर्श किया है। बुध्द की भांति इन्होंने भी लोकमंगल की भावना से अभिप्रेरित होकर न केवल लोकभाषा में अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया अपितु उन्ही की भांति समन्वय भावनाओं का परियच भी दिया और अपना उद्देश्य–

''कीरति भनिति भूति भति सोई ।,
सूरसरी सम सब कह हित होई, को निर्धारित किया।''

***प्रस्तावना* :**

तुलसीदास युग मुस्लिम संसकृति एवं सभ्यता के विकास का युग था। फिर भी सामान्य रूप लोक दशा अच्छी नहीं थी। लोक समाज में नैराश्य एवं हीनता व्याप्त हो रही थी। आर्थिक अधोगति का समय था। तुलसी ने अपने युग का वर्ण बड़े मार्मिक ढंग से किया है।

''कलि बारहिं बार दुकाल परै।
निबु अन्न दु:खी सब लोग मरै।।''

तुलसी युग में राजनैतिक परिस्थितियों में परिवर्तन होते थे। राजा या शासक अशिक्षित, अभिमानी, भोगविलासी, स्वार्थी एवं क्रूर थे। जनकल्याण की भावना नही के बराबर थी। चारों और युध्द का वातावरण, आपसी फूट–पाट, मार–काट, डराना–धमकाना, आदि था। ऐसे समय में समाज उत्कर्ष हूतू तुलसी ने रघुवंशी राजाराम के परिवार का आदर्श रखा। उनकी राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था को आदर्श रूप देकर प्रस्तुत किया। प्रसिध्द पाश्चात्य इतिहासकार बी.ए.स्मिथ ने लिखा है कि ''तुलसीदास भारत के सबसे महान पुरूष थे। उन्होंने करोडों ह्रदय पर अपना स्थान बना लिया है। तुलसीदास ने समृध्द सबल एवं महान भारतीय समाज की कल्पना की थी। तुलसीदास ने भारतीय जनसाधारण के ह्रदयाकाश से निराशान्धकार को तिरोहित करने के लिए एवं लोक संस्कृति, सभ्यता आदि की रक्षा हेतु राम के पद पंकजों का आश्रय लेना ही एकमेव उपाय समझा होगो। वहाँ राम कथा की लोक प्रसिध्दी, लोकप्रियता का भी इस चुनाव में शिष हाथ रहा होगा। चाहे इनकी अधिकांश रचनाओं गीतावली, दोहावली, रामचरितमानस, रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, कविताावली, विनय पत्रिका, बरवै रामायण आदि के चरित नायक राम अभिजात्य वर्ग से है, किंतु राम कथा, लोक या जनसाधारण में इतनी लोकप्रिय हो चुकी थी कि न केवल पुराणों में, रघुवंश, उत्तर रामचरित आदि संस्कृत साहित्य में अपितु जातक कथाओं में जैन साहित्य में (पऊम चरिउ ग्रंथ के रूप में)

और अनेक प्रांतो के लोग गीतों में अपना स्थान बना चुकी थी। यही कारण है कि तुलसी के चरित नायक–लोकनायक बन गए।

भारतीय समाज में परिवार एक महत्त्वपूर्ण अंग है। तुलसी संयुक्त परिवार के समर्थक है। उन्होंने अपने रामचरित मानस में राम–सीता के साथ–साथ भरत मांडवी, लक्ष्मण–उर्मिला, और शत्रुघ्न–श्रुतिकिर्ती के सौहार्दमय आदर्श दाम्पत्य जीवन के साथ पारिवारीक आत्मिक लगाव का सजीव चित्रण किया है। आदर्श परिवार की भावना अंतर्गत भाई–भाई, पति–पत्नी, पिता–पुत्र, सास, बहु, माता–विमाता, बहन–बहन, भाई–बहन, आदि पारिवारिक संबंधों को तुलसी ने अपनी रचनाओं में मार्मिक रूप से प्रेरकता प्रदान करनेवाले पात्रों को चित्रित किया है। उन्होंने इन संबंधो में समन्वय स्थापित करके एक आदर्श परिवार का निर्माण किया है, तुलसी ने एक पत्नीव्रत और एक पतिव्रत पर भी बल दिया है।

''एक नारी व्रत सब झारी।
ते मन बच क्रम पति हिकारी।।''

परिवार में बुजुर्गों के प्रति सेवा और सहयोग की भावना को भी महत्त्व दिया है। राम के प्रति एवं गुरूजनों के प्रति रघुकुल के सभी भाई और परिवार पुण्यभाव रखकर उनकी सेवा करते थे।

''सेवहिं सानुकाय सबभाई
रामचरन रति अति अधिकाई।।''

तुलसीदास जी के नारी विषयक विचार, दोहावली, विनयपत्रिका और कवितावली में मिल जाते हैं, परंतु प्रमुख रूप से 'रामचरितमानस' में ही उनका सम्यक निरूपण हुआ है। भरत मुनि ने कहा है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता।'

अर्थात जहाँ स्त्रीयों की पूजा होती है, वहाँ देवता रमण करते है, नारी के विविध रूपों को भी महत्त्व दिया है। लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, शक्ति आदि नाम से प्रचालित है। तुलसीदास जी ने जिस प्रकार नारी के गुणों का वर्णन किया है, उसी प्रकार दुर्गुणों की ओर भी संकेत दिया है। किंतु आज उन्हे कुछ विद्वान नार विरोधी मानते है। तुलसी ने कहीं कही पुरूष विरोधी, साधु सन्यासी के दुर्गुणोंकी भी आलोचना की है अर्थात् सभी के विरोधी थे, ऐसा मान लेना सबसे बड़ी भूल कही जा सकती है। एक ही पंक्ति को प्रमाण मानकर विरोधी मानते है–

''ढोल गवाँर सुद्र पसु नारी
सकल ताड़ना के अधिकारी।।''

तुलसीदास ने पतिव्रता नारी पर विशेष बल दिया है। सामाजिक उत्थान हेतु उन्होंने एक आदर्श नारी की कल्पना की है। तुलसी ने नारी के ज्ञान एवं वात्सल्य भाव की भी प्रशंसा की है। तुलसीदास ने सीता के माध्यम से भारतीय नारी का चित्रण किया है। उनके मतानुसार शील, गुण, लज्ज, सहनशीलता, कर्तव्य परायणता, सादगी पूर्णता, स्वावलंबन आदि भारतीय नारी के आभूषण है।

तुलसीदास जी को लोकनायक माना जाता है। आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है, 'भारत का लोकनायक वही हो सकता है जा समन्वय करे।' भारत की तद्‌युगीन आवश्यकता और तुलसी के कृतित्त्व को देखते हुए यह बात अधिकांशतः सत्य प्रतित होती है। तुलसी ने समाज में व्याप्त आपसी इर्ष्या, द्वेष, झगड़ो के स्थान पर परस्पर स्नेह और त्याग पर, समन्वय की भावना पर बल दिया। समाज में व्याप्त अशांति, दु:ख, अत्याचार, अधार्मिकता, परस्पर विषमता आदि को दूर करने का प्रयास तुलसी ने किया है। वैसे तो मध्यकाल में तुलसीदास जी जैसा भक्त, दार्शनिक, पंडित, नीतिज्ञ, समाजसुधारक, विचारक, क्रांतिकारी संत कवि दूसरा कोई नहीं हुआ है। तुलसी ने शैव एवं वैष्णव भावना का समन्वय विभिन्न दर्शनों का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय ज्ञान और भक्ति का समन्वय, राम और कृष्ण का समन्वय, राजा और प्रजा का समन्वय, सामाजिक एवं पारिवारिक समन्वय किया है, जो आज प्रेरक है।

तुलसी ने पारिवारिक चित्रण के साथ–साथ समाज के निम्न वर्ग नाई, धोबी, केंवट आदिवासियों का भी प्रभावशाली चित्रण किया है। समाज के बहिष्कृत लोगों को जैसे निषाद, शबरी, भिल्ल, कोल, कीरात आदि को भी अपनी रचनाओं में उचित स्थान दिया है। तुलसी तटस्थ कवि है, उन्होंने किसी भी वर्ग के सारूथ कोई पक्षपात नही किया है। गुण–अवगुणों का, अच्छाईयों एवं बुराइयों का चित्रण किया है। प्रो. कुंवरपालसिंह जी ने तुलसी की महानता पर लिखा है कि, ''तुलसी में कहीं दूसरे धर्म के लिए विद्वेष नहीं है, तुलसी इसलिए महान नहीं है कि उन्होंने रामावतार को अपने महाकाव्य का प्रमुख विषय बनाया है। तुलसी की महानता इसमें है कि उन्होंने साधारण जन के सुख– दु:ख को अपने काव्य का विषय बनाया है।'' इससे ज्ञात होता है कि तुलसी का दृष्टीकोण भेदभाव रहित था। उन्होंने जाति–पाति, उँच–नीच, छुआछूत के भेदभाव को दूर किया।

तुलसी अपने समय के प्रगतिवादी कवि थे। उनकी जाति के बारे में पूछने पर वे कहते हैं किर–

''मेरे जाति पाँती क न काहू जी जाति पाँती।
मेरे कोऊ काम को न हछौ काही के काम को।।''

तुलसी ने मानवता पर विशेष बल दिया है। प्रजापालक राम के आचरण का दिव्य प्रभाव समाज पर पड़ा था। अहल्या, शबरी, निषाद, केवअ, विभीषण आदि समाज के उपेक्षित तिरस्कृत लोगों के प्रति एवं सरभंग, जाम्बावान, हनुमान जैसे अर्धशिक्षितों के राम ने स्नेहपूर्वक गले लगाया।

तुलसीदास के सम्मुख जीवन से गरीबी, निरक्षरता, रोग, व्यक्तियों तथा वर्गो का परस्पर वैमनस्य तथा विषमता आदि को दूर करना ही उद्देश्य नहीं अपितु जीवन को पूर्णतः वैभवपूर्ण और स्वर्ग तुलय भी बनाना है। उनकी संकल्पना के रामराज्य से बढ़कर और कोई राज्य किसी भी संकल्पना में आज तक नहीं आया जिसमें सांसारिक जीवन जी इतनी पूर्णता और आध्यात्मिक जीवन की इतनी पराकाष्टा हो।

तुलसी का दावा है कि उनकी संकल्पना के राज्य में सभी समृध्द, वैभवशाली, पूर्ण ज्ञानी, सुखी, निराग तथा सुंदर होंगे। कोई दुःखी नहीं होगा, कोई गरीब नहीं होगा। किसी की भी छोटी आयु में मृत्यु नही होगी। रत्नो सें जड़े सोने करघे, जबार, तालाब और बावाहियों के घाट होंगे। प्रकृति अनुकूल चलेगी। समय पर और आवश्यकता अनुसार वर्षा होगी और आवश्यकतानुसार सूर्य ताप देगा। नदियों का जल मीठा और निर्मल होगा। वायु सदा सुगंधित चला करेगी। सभी लोगों में परस्पर प्रेम होगा। विषमता का अभाव होगा। सभी व्यापारी कुबेरों के समान अमीर होंगे। अज्ञान का नाश होगा। पाप का नाम निशान नहीं होगा। डाह, मद, मोह, छिप जाएंगे। भाँति–भाँति के कर्म, गुण काल तथा स्वभाव से उत्पन्न दुःख नहीं होंगे। दंड का नाम नही होगा क्योंकि कोई पाप नहीं करेगा कोई शत्रू नहीं होगा। अतः किसी को जीतने का प्रश्न नही होगा। भेदनीति की आवश्यकता नहीं होगी। क्योंकि सभी अनुकूल होंगे। तुलसी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक चेतना हेतु सीता का रामवनगमन में सादगीमय स्वावलंबी जीवन का प्रभावशाली चित्रण किया है।

''जद्यपि गृहं सेवक सेवकित। विपुल सदा सेवा विधी गुणी।।
निजकर गृह परिचरजा करई। रामचंद्र आयसु अनुसरई।।''

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि, तुलसी ऐसे राष्ट्रपुरूष थे जिन्होंने विश्रृंखल भारतीय समाज को एकता के सूत्र में पिरोये रखने का अद्भुत कार्य किया । तुलसी ने सामाजिक चेतना के उच्च आदर्शों को गागर में सागर भरने का सराहनीय प्रयास किया है। तुलसी आज विश्वव्यापी विभूति बन गये है। उनकी रचनाएँ समस्त संसार के लिए उपादेय है। एक–एक पद मानव समाज के उत्कर्ष हेत मुद्रालेख बन गए हैं। उनकी प्रत्येक रचना स्वाभाविक ही सामाजिक चेतना एवं सामाजिक कल्याण हेतु उल्लेखनीय है।

संदर्भः–

1.मध्यकालीन साहित्य विमर्श– डॉ. सुधा सिंह
2.रामचरित मानस – आ. रामचंद्र शुक्ल
3.मध्यकालीन हिंदीसंत – विचार और साधना– डॉ. केशनीप्रसाद चौरासिया

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org